

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.

The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website

https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namani.gov.in/

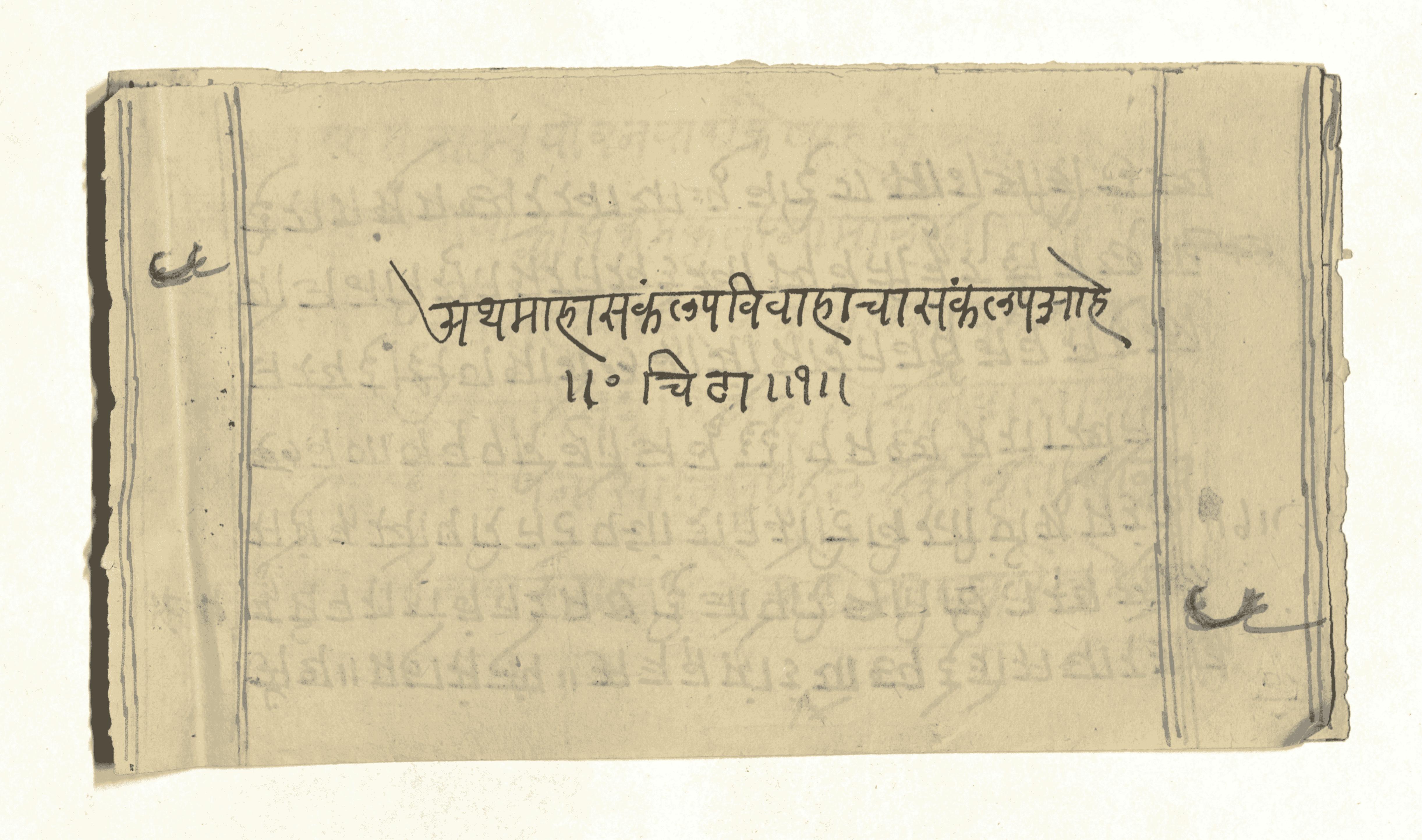
Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

काविकुलगुरु कालियास संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रंथालय, रामटेक हस्तिविद्यत ग्रंगह वाबल क. २४ के. वनीक विवादिविद्यी. नांव - सेहार्सेक्टप्. चेवर्ड/लिपीकारचे10011 देश. वृष्ठ. उ काळ	कविक्रम्य कार्यमा संस्कृत विश्वविद्यास्य मं थालय, रामरे क हस्तिस्थित संग्रह वाक विवाहिषिसी वाक विवाहिषसी वाक विवाहिषसी वाक अल्लाइस अल्ला १९० पृष्ठ १० वाळ
काविक् कर्ड कालिरास संस्कृत विश्वविद्यालय गंथालय, रामरेक इन्वकिखित संग्रह वावल का. ९४ (ग) वाव - विवाह भागिविद क्रिक्क किपीकार अ००११ देव पुष्ठ. पु	वाबिक लगुर कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय गंथालय, रामटेक हस्तिलिखिब संग्रह वाखल क. २४ (६୮) वर्गाक विवाहिविह्यी वाब - विवाह प्रयोग लेखक विवाह प्रयोग काळ प्रतिलेखका कुछ. ३८



क्षुण व्यं ते वात्ययो वनवा धि हे चरह सि इन हो पु हा ना हों कृत तरा हो व बेसह क्या व ए के क्र वा ल का य के कि के पण सर्वराह्य पक पंति तका ले के मह त्न कि वा स्वास्थ्य र्थ हो गण्यति गण वा स्वित्य प्रते हें के रो मा पक बे के मण्य के पक्षण व चित्र वा वस्ता है है के रो मा पक बे के मण्य वायन्यरेश श्री पयाणी गादान्यि मह्यदेश मह निहिती ययाम तृती यम हत षदु सञ्यती तेषु सप में में मंबंतरेयु गा नां श्रि च नो या तां कृत के ते हा पाराश्च गताः में भे भविमाने स्थमिद वस गणितो क्र मार्गणशा में माले विमाने समुद्र संग्रेस स्थारे समुद्र कर्ती समुक्र पारो स्थारी राज्यु एयं नियम सम्भा स्थान महिल्या

विक्ति हारतमधारमान्तारे वना नाजी जासी पाटन लाउँ गे ताहा नारमे जी चेवन हा लेमुनाम नाग प्रसी माने जी जी त्वाची उत्तर माज तजा च ता १४।८।२६ मा हाये श्रायन जी त्वाची उत्तर माज तजा च ता १४।८।२६ मा हाये श्रायन सु छे ६ राज शनी चारत राग ची ब्रा राचा जना विचा है। दे स्रके लिप न त्यां दीना चारतमा एपाः मान्तारे वं ने की रवे निये सर्वरा स्यव बंसं मित काले झक् लिख नि नास सि स्यं भी त्रिया मिला मि काले स्य कर ति स्व से मासक द राष्ट्र विलं इता प्र दें कालों ने स्क ता दृती स्व अक्ष नि नी सि से स्व भी स्व स्था कर यो साम ने से यर ण धर्म सजा ति स्था के स्व से यो से विले से व रणा ध्राम नि स्था के सि नारा से ण कि तसे करा विया ना विधि नो कर या के ति रिष्ये । प्र । की नि मा ना स्व है ले प्र मा मा

```
[OrderDescription]
,CREATED=01.08.19 16:42
,TRANSFERRED=2019/08/01 at 16:45:12
,PAGES=5
,TYPE=STD
,NAME=S0001228
,Book Name=M-24A-MHASANKLP
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
```